टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-10.3

निम्नलिखित अनुच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जनसंख्या की वृद्धि भारत के लिए आज एक विकट समस्या बन गई है। यह समाज की सुख-संपन्नता के लिए एक भयंकर चुनौती है। महानगरों में कीड़े-मकोड़ों की भाँति अस्वास्थ्यकर घोंसलों में आदमी भरा पड़ा है- न धूप, न हवा, न पानी, न दवा, पीले-दुर्बल, निराश चेहरे। यह संकट अनायास नहीं आया है। संतान को ईश्वरीय विधान और वरदान माननेवाला भारतीय समाज ही इस रक्तबीजी संस्कृति के लिए जिम्मेदार है। चाहे खिलाने को रोटी और पहनाने को वस्त्र न हों, शिक्षा को शुल्क और रहने को छप्पर न हो, लेकिन अधभूखे, अधनंगे बच्चों की कतार खड़ी करना हर भारतीय अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझता है। यही कारण है कि प्रतिवर्ष एक ऑस्ट्रेलिया यहाँ की जनसंख्या में जुड़ता चला जा रहा है। यदि इस जनवृद्धि पर नियंत्रण न हो सका तो हमारे सारे प्रयोजन और आयोजन व्यर्थ हो जाएँगे। धरती पर पैर रखने की जगह नहीं बचेगी। भारत की जनसंख्या इसी गति से बढ़कर सन् 2000 में एक अरब तक जा पहुँची।

(क) जनसंख्या वृद्धि भारत के विकास के लिए चुनौती क्यों है?

(ख) समाज की सुख संपन्नता जनसंख्या पर कैसे आश्रित है?

(ग) भारतीय जनसंख्या की तुलना आस्ट्रेलिया से क्यों की गई?

(घ) इस अनुच्छेद का सार एक तिहाई शब्दों में लिखिए।

(ङ) इस अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।

(च) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ शब्दकोश से देखकर लिखिए-विकट, चुनौती, अनायास, अधिकार, प्रयोजन

(छ) निम्नलिखित शब्दों से उचित उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए–
अस्वास्थ्यकर, भारतीय, प्रतिवर्ष, प्रयोजन

10.4 अपठित कविता कैसे पढ़ें

आइए, एक उदाहरण कविता का भी देख लें। कविता का पठन और अर्थबोध गद्य-सामग्री के पठन और अर्थबोध से भिन्न होता है। गद्य-सामग्री का पठन द्रुतगति से और मौन रहकर करना होता है, किंतु कविता के वाचन में उचित विराम और लय के साथ सस्वर पाठ करने की आवश्यकता होती है। जब तक सस्वर और उचित लय के साथ नहीं पढ़ेंगे, उसे पढ़ने का आनंद नहीं आएगा, न ही उसका अर्थ खुलेगा।

टिप्पणी

पढ़ें कैसे

दूसरी बात यह है कि गद्य की भाँति कविता में सूचनाओं और ज्ञान का भंडार नहीं होता और न ही हम उसका वाचन ज्ञान ग्रहण करने के लिए करते हैं। गद्य की भाँति हम कविता के दस-पंद्रह पृष्ठ एक साथ नहीं पढ़ते। कविता तो भावों से परिपूर्ण होती है, उसमें प्रवाह होता है, संगति होती है और कई बार शब्दों के दोहरे अर्थ होते हैं। अत: कविता धीरे-धीरे, लयपूर्वक, सस्वर पढ़नी चाहिए, जिससे आप कवि के भावों को स्वयं अनुभव कर सकें और उसके संदेश को समझ सकें।

आप जान गए हैं कि कविता की भाषा गद्य की भाषा से भिन्न होती है। उसमें भारी-भरकम शब्द नहीं होते। इसके अतिरिक्त, उसमें यदि कोई नया शब्द होता भी है तो ज़रूरी नहीं कि कवि ने उसको बिलकुल उसी अर्थ में लिखा हो, जो शब्दकोश में दिया गया है। नीचे दिए गए उदाहरण से बात स्पष्ट हो जाएगी।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की यह कविता आपने कभी पढ़ी है ? नहीं, तो ज़रा इसे सस्वर और लयपूर्वक पढ़िए:

एक बूँद

कढ़ी = बाहर निकली
अनमनी = उदास, बेमन
धूल में मिलना = नष्ट होना

ज्यों निकल कर बादलों की गोद से,
थी अभी एक बूँद कुछ आगे बढ़ी।
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी,
आह, क्यों घर छोड़कर मैं यों कढ़ी।
दैव मेरे भाग्य में है क्या बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में।
गिर पड़ूँगी चू अँगारे पर किसी,
या गिरूँगी मैं कमल के फूल में।

बह गई उस काल कुछ ऐसी हवा,
वह समंदर ओर आई अनमनी।
एक सुंदर सीप का मुँह था खुला,
वह उसी में जा गिरी मोती बनी।

लोग यों ही हैं झिझकते-सोचते,
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किंतु अक्सर छोड़ना घर का उन्हें,
बूँद-सा कुछ और ही देता है कर।

इस कविता में आपको किसी शब्द का अर्थ समझने में कठिनाई हुई? नहीं हुई न! किंतु 'ज्यों' शब्द जरा नया-सा है। है न? 'ज्यों' का अर्थ है **'जैसा'** किंतु शब्दकोश देखे बिना संदर्भ से आप इसका अर्थ ज़रूर समझ गए होंगे और यह भी समझ गए होंगे कि कवि क्या कहना चाह रहा है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न-10.4

सही कथन पर (√) का और गलत कथन पर (X) का निशान लगाइए :

1. यह कविता बादलों के बारे में है। ☐
2. यह कविता बूँद के बारे में है। ☐
3. यह कविता बूँद के भयभीत होने के बारे में है। ☐
4. यह कविता बूँद के भाग्य के बारे में है। ☐
5. कवि कहना चाहता है कि हमें नई स्थितियों में ढलना चाहिए। ☐
6. कवि कहना चाहता है कि हमें साहसी होना चाहिए। ☐
7. कवि कहना चाहता है कि भाग्य के भरोसे नहीं रहना चाहिए। ☐
8. यह कविता उद्यमी और साहसी लोगों के बारे में है। ☐
9. यह कविता डरपोक लोगों के बारे में है। ☐
10. यह कविता भाग्यवादी लोगों के बारे में है। ☐

10.5 इन बातों का ध्यान रखिए

अब आप समझ कर पढ़ने का आसान-सा तरीका जान गए हैं। आप गद्य और कविता को अधिक-से-अधिक पढ़ने का अभ्यास कीजिए। इसके लिए इस पुस्तक में दिए पाठों को ध्यानपूर्वक पढ़िए। आपकी सहायता के लिए प्रत्येक पाठ में आए कठिन शब्द और उनके अर्थ साथ में दिए गए हैं। हर सामग्री पर विस्तार से चर्चा की गई है। इसके अतिरिक्त पाठों के विभिन्न अंशों पर प्रश्न भी पूछे गए हैं, जिनका उत्तर देने पर आप जान पाएँगे कि आपने पाठ को पढ़कर कितना समझा है। इस सामग्री का पूरा-पूरा लाभ उठाने के लिए आपको पढ़ने-समझने का अभ्यास करना आवश्यक है। उसके लिए निम्नलिखित कार्य कीजिए:

1. सामग्री को द्रुत गति से, मौन रहकर, समझकर पढ़ने की कोशिश कीजिए।
2. कविताओं को सस्वर पढ़िए और उसकी लय तथा झंकार का आनंद उठाइए और भाव ग्रहण करने का प्रयास कीजिए।
3. कठिन शब्दों के अर्थ शब्दकोश की सहायता से जानिए।
4. मूल पाठ को बार-बार पढ़िए और उसमें समाहित घटनाओं, विचारों आदि को नोट कर लीजिए। ऐसे शब्दों पर विशेष ध्यान दीजिए जो पाठ के केंद्र-बिंदु से जुड़े हैं।
5. पाठगत प्रश्नों के उत्तर दीजिए। इन उत्तरों को दिए गए उत्तरों से मिलाइए। यदि गलत हों तो पुनः अंश पढ़कर सवालों के जवाब देने का प्रयास कीजिए।

टिप्पणी

6. पाठांत प्रश्नों के उत्तर लिखकर देखिए जिससे आपको लिखने का अभ्यास हो सके और आप परीक्षा में भी तीव्र गति से लिखकर प्रश्नों के उत्तर दे सकें।

7. जब तक आपको सारे प्रश्नों के उत्तर पूरी तरह समझ में न आ जाएँ, उपर्युक्त सभी कार्य बार-बार कीजिए। ऐसा करने पर आपको प्रश्नों के उत्तर रटने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। सारी सामग्री आपकी समझ, ज्ञान और अनुभव का अंग बन जाएगी।

इस पाठ्य सामग्री के अतिरिक्त आपके अभ्यास के लिए पाठांत प्रश्नों के रूप में कुछ अपठित सामग्री भी दे रहे हैं। यह सामग्री अर्थबोध का अभ्यास कराने में आपकी मदद करेगी।

हमें पूरा विश्वास है कि इन दोनों प्रकार की सामग्रियों की सहायता से आप पढ़ने की कुशलता का समुचित विकास कर पाएँगे।

आइए, आपको ऐसी सामग्री पढ़ने के तरीके बताते हैं जो आपने कभी नहीं पढ़ी, जो आपके लिए बिल्कुल नई है यानी अपठित है। यह गद्य अर्थात् निबंध, कहानी, लेख, समाचार आदि या कविता भी हो सकती है। जब आप किसी नई पठन सामग्री को पढ़ना शुरू करें तो उससे पहले उस पर एक नज़र ऊपर से नीचे तक डालें। आपको देखते ही कुछ मोटी-मोटी-सी चीज़ें समझ में आ जाएँगी। जैसे-पठन सामग्री का शीर्षक क्या है, किसके बारे में है, उसके मुख्य बिंदु क्या हैं, यदि कोई चित्र या आँकड़ा या तालिका दी गई है तो उसे ध्यान से देखें, उपशीर्षक पर ध्यान दें। कुछ बातें उभार कर लिखी जाती हैं यानी टेढ़े छपे अक्षर, शब्द या वाक्य में होंगी। उन्हें ध्यान से पढ़िए।

10.6 कुछ और बातें

अब आप पूरे लेख को शुरू से लेकर अंत तक पढ़ने का प्रयास कीजिए। आपने ध्यान दिया होगा कि इस बार आप पूरे अनुच्छेद को अधिक तेज़ी से पढ़ गए हैं। चीज़ें कुछ जानी पहचानी लग रही हैं। आपको ऐसी ही कोई और स्थिति ध्यान में आ रही है? ऐसे में आप अख़बार या पुस्तक बेहतर तरीके से समझ पाएँगे। जितना अधिक-से-अधिक पढ़ेंगे उतनी ही तेज़ी पठन में आप बना पाएँगे। इसके लिए पुस्तकालय जाकर अपनी पसंद की पुस्तकें चुनिए और अधिक-से-अधिक पढ़ने का अभ्यास कीजिए। आपको एक बात और बताते हैं—यदि पढ़ते समय कोई अपरिचित शब्द आता है तो आप सर्वप्रथम संदर्भ से ही अर्थ समझने का प्रयास करें। यह आप इसी पाठ में पढ़ चुके हैं। यदि फिर भी न समझ में आए तो आप उस शब्द का संरचनात्मक विश्लेषण करने का प्रयास कीजिए, उदाहरण के लिए मान लीजिए कि आपके सामने एक शब्द आया-'दिग्विजय'। इस शब्द का विश्लेषण करना चाहेंगे तो आपको पढ़ने से 'विजय' शब्द साफ़ समझ आ रहा होगा परंतु आगे 'दिग्' लग जाने से शब्द अनजाना-सा लग रहा होगा। यह 'दिग्' शब्द वास्तव में 'दिक्' है जिसका अर्थ है-'दिशा' और 'दिक्' शब्द 'विजय' से पूर्व लगने और संधि के नियम के कारण 'दिग्' बन गया और पूरा शब्द बना 'दिग्विजय'। इसी प्रकार अपरिचित शब्दों के मूल शब्द को पहचानने का प्रयास कीजिए फिर उस शब्द के आगे और पीछे लगे उपसर्ग-प्रत्यय को

टिप्पणी

पहचानिए। साथ ही इनके लगने से बने शब्द में आए बदलाव को पहचानने का प्रयास कीजिए।

आपने क्या सीखा

- पठन कौशल को विकसित करने के लिए इसके अनेक चरण हैं।
- सामग्री को पढ़ने की कला का विकास करने के लिए पढ़ने में रुचि जगानी बहुत आवश्यक है।
- पठन में गति बढ़ाने के लिए अधिक से अधिक सामग्री प्रतिदिन पढ़ना और घड़ी रखकर पढ़ना ज़रूरी है। इससे आप एक मिनट में पढ़े गए शब्दों की संख्या गिनिए और उन्हें बढ़ाने का प्रयास कीजिए।
- अपरिचित या अपठित सामग्री को पढ़ने से पहले उस पर एक दृष्टि डालना आवश्यक है, जिससे उसके शीर्षक, उपशीर्षक, चित्र, आँकड़े आदि का सामान्य बोध हो सके। तत्पश्चात्, उसे शुरू से अंत तक गंभीरतापूर्वक पढ़ना चाहिए।
- गद्य पढ़ते समय विचारों के क्रम पर ध्यान देना आवश्यक होता है। इसी प्रकार कविता पढ़ते समय भाव ग्रहण करने के लिए उसे लय के साथ पढ़ना आवश्यक होता है।
- पढ़ते समय कोई अपरिचित और कठिन शब्द आने पर उसे एक कागज़ की चिट पर लिख लेना चाहिए और शब्दकोश में उसका अर्थ देखकर याद कर लेना चाहिए।

योग्यता विस्तार

कुशलता से पढ़ने के जीवन में बहुत लाभ हैं–इसके लिए शांतचित्त होकर पढ़ने का अभ्यास कीजिए।

- कागज़ पेंसिल लेकर पढ़िए–मुख्य बिंदुओं को लिख लीजिए, उन्हें याद रखने का प्रयास कीजिए।
- समय का सदुपयोग करना सीखिए।
- प्राथमिकता सुनिश्चित कर पढ़ाई कीजिए।
- क्या पढ़ना है, क्या नहीं, निर्णय लेना स्वयं सीखिए।
- क्या पढ़ना है, क्यों पढ़ना है, कैसे पढ़ना है? आदि प्रश्न सदा स्वयं से करते रहिए। उनके उत्तर ढूँढने का प्रयास कीजिए।
- पढ़ने में गति बढ़ाने का निरंतर प्रयास करते रहिए।
- नहीं पढ़ने वाली चीज़ें अलग हटाकर रखिए।

टिप्पणी

पढ़ें कैसे

- पढ़ने वाली उपयोगी चीज़ों को व्यवस्थित कर संभाल कर रखिए।
- पढ़ना अपनी आदत बना लीजिए-लाभकारी रहेगी।

पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित अनुच्छेदों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

(क) भारत जैसा सुंदर और महान देश दूसरा कौन-सा है, जिसके उत्तर में हिमालय जैसा विश्व प्रसिद्ध विशाल पर्वत है। इस पर्वत को हम देवताओं का स्वर्ग कहें, ऋषियों का तपोवन कहें, प्राकृतिक सुषमा का भंडार कहें, पवित्र निर्मल जलाशयों का आगार कहें, हिम का मुकुट कहें, उत्तर का प्रहरी कहें या संसार का सौंदर्य कहें या जो कुछ भी कहें, वह पूर्ण रूप से सत्य होगा। इस पुण्यभूमि का भारत के इतिहास से गहरा संबंध है। भूगोल का यह मानदंड है। मंदिरों का यह क्षेत्र है। तीर्थ यात्रियों के लिए यह धर्म भूमि है और सैलानियों के लिए स्वर्ग।

विशाल हिमालय पर्वत की श्रेणियाँ कश्मीर से असम तक फैली हुई हैं। इन श्रेणियों में अमरनाथ, बदरीनाथ, केदारनाथ, गंगोत्तरी, यमुनोत्तरी आदि अनेक तीर्थ स्थान हैं, जिनके दर्शन के लिए देश के विभिन्न प्रदेशों के निवासी लालायित रहते हैं। इसी पर्वत श्रेणी में कश्मीर है, जो पृथ्वी का स्वर्ग कहलाता है।

प्रश्न

1. हिमालय को प्राकृतिक सुषमा का भंडार क्यों माना गया है?
2. कश्मीर को पृथ्वी का स्वर्ग क्यों कहा गया है?
3. भारत की सुंदरता और महानता का श्रेय हिमालय को क्यों दिया गया है।
4. इस अनुच्छेद का एक तिहाई शब्दों में सार लिखिए।
5. इस अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।

2. निम्नलिखित कविता की पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।

फूलों से नित हँसना सीखो, भौंरों से नित गाना।
तरु की झुकी डालियों से नित, सीखो शीश झुकाना।
सूरज की किरणों से सीखो, जगना और जगाना।
लता और पेड़ों से सीखो, सबको गले लगाना।
दीपक से सीखो जितना हो सके अँधेरा हरना।
पृथ्वी से सीखो जीवों की सच्ची सेवा करना।
जलधारा से सीखो आगे, जीवन-पथ पर बढ़ना।

टिप्पणी

और धुएँ से सीखो हरदम, ऊँचे ही पर चढ़ना।
सत्पुरुषों के जीवन से सीखो चरित्र निज गढ़ना।
अपने गुरु से सीखो बच्चो, उत्तम विद्या पढ़ना।

अब निम्नलिखित प्रश्नों के एक या दो वाक्यों में उत्तर लिखिए–

1. वृक्ष की झुकी हुई डालियाँ हमें क्या सिखाती हैं?
2. दीपक किसका प्रतीक है?
3. अंधेरा किसका प्रतीक है?
4. अपने गुरुओं से हमें क्या सीखना चाहिए?
5. वृक्ष की झुकी हुई डालियाँ, हमें क्या संदेश देती हैं और इस संदेश का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है?
6. जलधार हमें क्या संदेश देती है? इस संदेश को प्राप्त कर हम अपने जीवन में कैसे आगे बढ़ सकते हैं?
7. गुरु जीवन में ज्ञान का प्रकाश फैलाता है। कैसे?
8. निम्नलिखित पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए–
   (क) 'दीपक से सीखो जितना हो सके अँधेरा हरना।'
   (ख) 'सत्पुरुषों के जीवन से सीखो निज चरित्र गढ़ना।

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

10.1 1. (ग) 2. (घ) 3. iii, i, v, iv, ii

10.2 1. (क) 2. (क) X (ख) X (ग) √ (घ) √ (ङ) X (च) X (छ) X (ज) √

10.3 (क) विकास के साधन सीमित हैं, और जनसंख्या असीमित। अत: जनसंख्या वृद्धि विकास के लिए चुनौती बन गई है।

(ख) अच्छा भोजन, घर, पहनने के लिए वस्त्र, शिक्षा सुविधाएँ आदि सुख-संपन्नता के आधार हैं। ये सबको तभी मिल सकते हैं, जब जनसंख्या नियंत्रित हो।

(ग) भारत में प्रत्येक वर्ष उतनी जनसंख्या वृद्धि होती है, जितनी ऑस्ट्रेलिया देश की कुल जनसंख्या है। अत: भारत की जनसंख्या की वृद्धि की तीव्रता को बताने के लिए इसकी तुलना आस्ट्रेलिया से की गई है।

टिप्पणी

पढ़ें कैसे

(घ) स्वयं कीजिए

(ङ) 'जनसंख्या वृद्धि', 'भारत देश की बढ़ती जनसंख्या', 'भारत की जनसंख्या-विकट समस्या', 'एक अरब: बस कर अब' आदि जैसे उपयुक्त शीर्षक।

(च) स्वयं कीजिए

(छ) उपसर्ग - अ, प्रति, प्र

प्रत्यय - कर, ईय

10.4 1. X 2. √ 3. √ 4. √ 5. √ 6. √ 7. √ 8. × 9. √ 10. √